बाल भारती पब्लिक स्कूल,पीतम पुरा

कक्षा -तीसरी

अधिन्यास कार्य **तिथि : 16.4.2020**

विषय-कहानी **उपविषय - पापा की सुंदर गेंद**

आइए दोहराएँ :- अभी तक आपने पढ़ा कि पापा पाव्लोवो -पोसाद नामक छोटे से नगर में रहते थे । उनके माता - पिता ने उन्हें एक सुंदर और रंग-बिरंगी गेंद दी।

अब आपकी बारी

पढ़ें और दोहराएँ :-

नवीन शब्द

सूरज
गुलाबी
चॉकलेट
कत्थई
आसमान
पेंदा
खूबसूरत
लालची
घमंड
पहियों
क्षणभर
तोप
चीथड़ा
शेखीखोर

वाक्य बनाएँ:-

- खूबसूरत
- घमंड
- गेंद
- लालची
- गुलाबी

नोट:- नवीन शब्द और वाक्य रचना उत्तर पुस्तिका में करें।

पूरे पाव्लोवो-पोसाद में किसी ने ऐसी गेंद पहले कभी नहीं देखी थी। वह मास्को में खरीदी गई थी। मेरे खयाल से मास्को में भी उस जैसी ज़्यादा गेंदें नहीं थीं बड़े-बड़े लोग भी उसे देखने के लिए आया करते थे।

गेंद सचमुच बहुत ही खूबसूरत थी और पापा को उसपर बड़ा नाज़ था। गेंद को लिए वह जिस तरह अकड़कर चला करते, उससे तो यही लगता था कि जैसे गेंद उन्होंने ही बनाई है और इन चारों रंगों से उसे रँगा है। जब पापा अपनी खूबसूरत गेंद लेकर बाहर खेलने जाते, तो चारों तरफ़ से लड़के दौड़े आते। पापा उन्हें अपनी सुंदर गेंद से नहीं खेलने देते थे। वह उससे अकेले ही खेलते। लेकिन अकेले खेलने में ज़्यादा मज़ा नहीं आता। यही वजह थी कि लालची पापा दूसरे लड़कों के पास ही खेला करते थे। वह उन्हें जलाना चाहते थे।

इसपर लड़कों ने कहा, "हम इसके साथ नहीं खेलेंगे!"

पूरे दो दिन वे पापा के साथ नहीं खेले। तीसरे दिन उन्होंने कहा, "गेंद तुम्हारी बुरी नहीं है। यह बड़ी भी है और इसके रंग भी अच्छे हैं। लेकिन इसे अगर तुम मोटर के नीचे फेंक दो, तो और गेंदों की तरह यह भी फट जाएगी। इसलिए इसमें अकड़ने की कोई बात नहीं है।"

"मेरी गेंद कभी नहीं फटेगी!" पापा ने घमंड से कहा।

"हाँ-हाँ, फट जाएगी!" लड़कों ने चिढ़ाते हुए कहा।

"नहीं फटेगी!"

"लो, वह रही मोटर," लड़कों ने कहा, "तो जाओ, फेंको न उसे! क्यों, डर लग रहा है?"

घमंड में चूर पापा ने अपनी गेंद मोटर के नीचे फेंक दी। क्षणभर वे सभी बुत बने खड़े रहे। गेंद अगले पहियों के बीच से लुढ़ककर निकल गई और पिछले दाएँ पहिए के एकदम नीचे पहुँच गई। मोटर ने झटका खाया, गेंद के ऊपर से निकली और सीधी आगे चली गई। लेकिन गेंद वहीं मौजूद थी।

Scanned with CamScanner

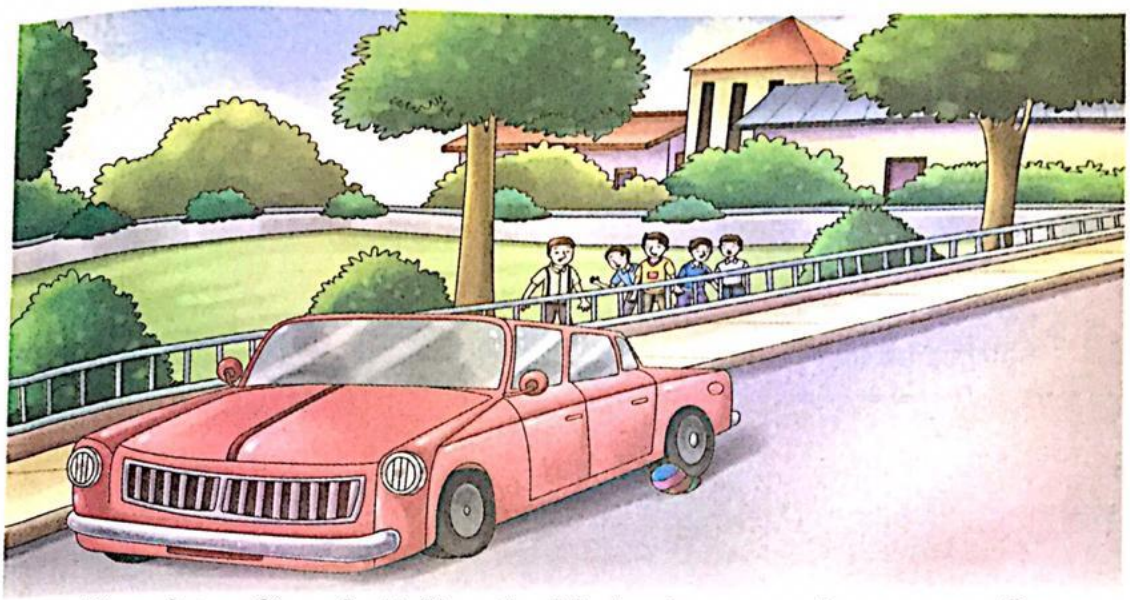

"नहीं फटी! नहीं फटी!" गेंद को लेने के लिए लपकते हुए पापा चिल्लाए। तभी ज़ोरों से आवाज़ हुई—धड़ाक! लगता था, जैसे छोटी तोप दागी गई हो। यह गेंद की ही आवाज़ थी! वह फट ही गई। पापा भागते हुए जब वहाँ पहुँचे, तो उन्हें बस रबड़ का एक मैला चीथड़ा-सा ही नज़र आया। वह ज़रा भी सुंदर नहीं था। अब पापा ने रोना शुरू किया। वह घर को भागे और सभी लड़के ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

"फट गई! फट गई!" वे चिल्लाए, "अच्छा सबक मिला तुम्हें!"

पापा बहुत डर गए और रोने लगे। उन्होंने रोते-रोते अपने चाचा को बताया। उन्होंने पापा से कहा— "तुम्हें लालची और शेखीखोर नहीं होना चाहिए था। पापा ने कहा कि वह लालची और शेखीखोर नहीं होना चाहते। वह इतनी ज़ोर-ज़ोर से और इतनी देर तक रोते रहे कि उनके चाचा को विश्वास हो गया कि पापा सच बोल रहे हैं। उन्होंने पापा को एक नई गेंद खरीदकर दे दी। यह पहली गेंद जैसी सुंदर तो नहीं थी, लेकिन गली के सभी लड़के उससे खेलते थे। हर किसी को मज़ा आया और किसी ने भी पापा को लालची नहीं कहा।

—अलेक्सांद्र रास्किन

Scanned with CamScanner